डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID: principalcmjcollege@gmail.com Web:www.cmjcollege.com Mob.No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा पार्ट–II के छात्रों के लिए कोर्स मैटेरियल (दिनांक–05 मई, 2020)

प्रगतिवाद की प्रवृत्तियां

‘प्रगतिवाद’ छायावादी परंपरा के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ विषिष्ट वैचारिकता पर आधारित वाद है। वह छायावाद के मदमस्त यौवन और नन्दन कानन की भस्म से पैदा नहीं हुआ बल्कि वह छायावाद की समस्त प्रवृत्तियों का गला घोंटकर उत्पन्न हुआ। इसमें हेगेल का ‘द्वन्द्वात्मकवाद’ और फायरबाख (1804–72) का ‘भौतिकवाद’ मिलाकर कार्ल मार्क्स ने दासप्रथा, सामंती प्रथा, पूँजीवादी व्यवस्था द्वारा जनसाधारण किसान–मजदूरों के षोषण, झूठ, लूट और यातना के खिलाफ पूरी दुनिया में साम्यवादी व्यवस्था स्थापित करने की वैचारिकता का प्रचार–प्रसार किया। वह मार्क्सवादी दृष्टिकोण के अनुकूल विचारधारा के लिए रूढ़ हो गया। इसलिए प्रगतिवाद सर्वथा मार्क्सवाद से बँधा हुआ है। इसका सीधा संबंध मस्तिष्क, चिन्तन वृत्ति और विष्लेषण प्रवृत्ति से है, संष्लेषण प्रवृत्ति से नहीं। दर्षन का उद्देष्य है ‘सत्य की खोज’ करना, सांसारिकता से छुटकारा पाकर ‘निर्वाण’ या ‘मोक्ष’ की प्राप्ति। किन्तु मार्क्स (1818–83) के सामने ‘दुनिया को जानना नहीं’ बल्कि ‘दुनिया को बदल डालने’ की समस्या है। इसी से मार्क्स के वैचारिक दर्षन या प्रगतिवाद के वैचारिक दर्षन की बुनियाद वैष्विक पुनर्निर्माण है। धर्म और ईष्वर को खारिज कर संसार से सर्वहारा वर्ग को षोषणमुक्त कर वर्गहीन समाज की स्थापना मार्क्सवाद तथा प्रगतिवाद का चरम उद्देष्य है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वह बौद्ध दर्षन और गाँधीवाद के अहिंसा के विरुद्ध ‘हिंसात्मक क्रांति’ का भी समर्थन करता है। प्रगतिवादी साहित्य का लक्ष्य इसी साम्यवादी विचारधारा का प्रचार करना तथा षोषित वर्ग को क्रांति करने के लिए षोषक वर्ग’के विरुद्ध उत्तेजित करना है।

प्रगतिवाद की प्रमुख प्रवृत्तियां :– प्रगतिवाद का जन्म सन् 1935 ई0 के नवम्बर महिने में लंदन में हुआ। इसके प्रणेता सज्जाद जहीर थे। इसका विकास लंदन से चलकर यूरोप के विभिन्न देषों में हुआ। यह लेखक समूह अपने लेखन से सामाजिक समानता का समर्थन करता था और समाज तथा देष में व्याप्त कुरीतियों, षोषण, यातना, अन्याय, पिछड़ेपन, प्राचीन अंधविष्वासों व धार्मिक सांप्रदायिकता का खुलकर विरोध करता था। भारत में 12–14 जनवरी, 1936 को ‘हिन्दुस्तान एकेडमी’ का वार्षिक अधिवेषन हुआ। इसमें अनेक साहित्यकार एकत्र हुए, जिसमें सच्चिदानन्द सिन्हा, डॉ0 अब्दुल हक, गंगानाथ झा, जोष मलीहाबादी, मुंषी प्रेमचंद आदि मौजूद थे। यहीं सज्जाद जहीर ने प्रेमचंद के साथ ‘प्रगतिषील संगठन’ के घोषणापत्र पर बातचीत कर हस्ताक्षर किये। हिन्दी में प्रगतिषील लेखक संघ का प्रथम अधिवेषन 9–10 अप्रैल, 1936 को प्रेमचंद की अध्यक्षता तथा सज्जाद जहीर और मुल्कराज आनंद की उपस्थिति में लखनऊ में हुआ। प्रगतिवाद की मुख्य प्रवृत्तियां निम्नलिखित हैं–

1. **पूरी दुनिया को बदलने की वैचारिक प्रवृत्ति** :– मार्क्सवाद प्रगतिवाद की आत्मा है। वह प्रगतिवाद की जीवनदायिनी ताकत है। कार्ल मार्क्स के समक्ष जो परिस्थितियां थीं उनमें दास प्रथा, सामंती प्रथा, पूँजीवादी व्यवस्था का दबाव इस कदर पूरी दुनिया की सामाजिक व्यवस्था पर हावी था, जिसमें किसानों–मजदूरों का जीवन बद से बदतर हो गया

था। वर्गवादी व्यवस्था के तई षोषक वर्ग– सामंतों, जमींदारों, राजे–रजवाड़े, सेठ–साहुकारों और पूँजीपतियों ने मिलकर गरीब जनसमुदाय का खून जोंक की तरह चूस रहा था। इस विषम परिस्थिति में मार्क्स के समक्ष दुनिया को देखने से ज्यादा जरूरी दुनिया को बदलना था। इसलिए मार्क्स ने एक योद्धा की तरह हीगेल के दर्षन से ''द्वन्द्वात्मक'' और फायरबाख के दर्षन से ''भौतिकवाद'' लेकर दोनों के कॉकटेल को प्रस्तुत कर पूरी दुनिया के साहित्य, समाज, इतिहास, दर्षन, चिन्तन और सोच को बड़े पैमाने पर प्रभावित किया।

मार्क्स ने हीगेल के 'सत्', 'चित्त' की सत्ता में अवस्थित idea की जगह matter को मूल तत्त्व माना और कहा कि, 'यह मूल प्रकृति जब साम्यावस्था में रहती है तो उसमें क्षोभ उत्पन्न होता है और तब इसका रूप परिवर्तित हो जाता है तथा उसमें स्वयं चेतना उत्पन्न हो जाती है। मतलब यह कि प्रत्येक वस्तु में उसके विपरीत विनाषक धर्म होते हैं, जिससे द्वन्द्व या संघर्ष पैदा होता है। दो वस्तुओं के साहचर्य एवं संघर्ष से तीसरी, तीसरी से चौथी की अनंत प्रक्रिया जारी रहती है और प्रत्येक नयी विकसित वस्तु प्रथम दो से अधिक उच्चतर और श्रेष्ठतर होती है। यहां अंषतः डार्विन के विकासवाद को भी देख सकते हैं। मार्क्स की दृष्टि में परिववर्तन की यह प्रक्रिया गुणात्मक परिवर्तन की प्रक्रिया है–The changing of quantity into quality. मार्क्सवादी विचारधारा को निम्न रूप में समझा जा सकता है–

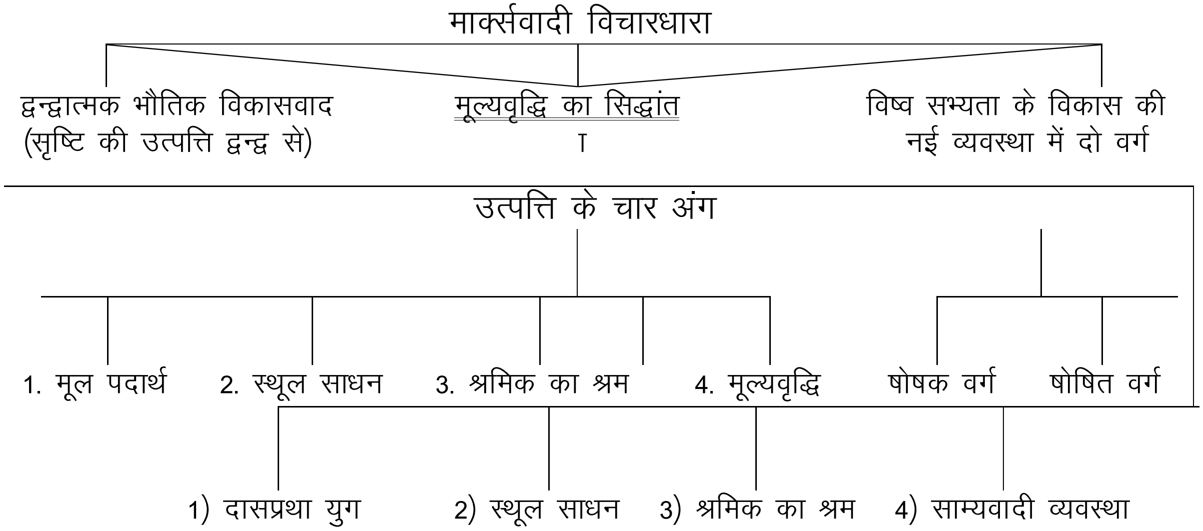
मार्क्सवादी विचारधारा
द्वन्द्वात्मक भौतिक विकासवाद (सृष्टि की उत्पत्ति द्वन्द्व से)
मूल्यवृद्धि का सिद्धांत
विष्व सभ्यता के विकास की नई व्यवस्था में दो वर्ग
उत्पत्ति के चार अंग
1. मूल पदार्थ
2. स्थूल साधन
3. श्रमिक का श्रम
4. मूल्यवृद्धि
षोषक वर्ग
षोषित वर्ग
1) दासप्रथा युग
2) स्थूल साधन
3) श्रमिक का श्रम
4) साम्यवादी व्यवस्था

मार्क्स का लक्ष्य इसी चौथी व्यवस्था– ''साम्यवादी व्यवस्था'' को वैष्विक स्तर पर लागू कर एक वर्गहीन समाज व्यवस्था को स्थापित करना था। प्रगतिवादी साहित्य का लक्ष्य भी मार्क्स की इसी साम्यवादी विचारधारा को स्थापित करना था।

2. धर्म, ईश्वर एवं परलोक का विरोध :– प्रगतिवादी कवियों ने धर्म, ईष्वर, भाग्यवाद, आत्मा, स्वर्ग, नरक और परलोक आदि का खुलकर विरोध किया। उसकी दृष्टि में ईष्वर की जगह मानव की सत्ता सर्वोपरि है। इसी से यह कहा गया कि 'धर्म एक अफीम का नषा है और प्रारब्ध एक सुंदर प्रवंचना। उसके समक्ष नस्ल भेद, वर्ण भेद, वर्ग भेद आदि कोई मायने नहीं रखता है। मन्दिर, मस्जिद, गीता और कुरान सब निरर्थक है। मनुष्य को मनुष्य न कहना, मनुष्यता के प्रति संवेदनषील न होना दुःखद और बर्बर है। कवि के हाहाकार का एक चित्र है– ''मनुज को मनुज न कहना आह!''

3. पूँजीपति वर्ग के प्रति यथार्थ और घृणा का प्रचार :– प्रगतिवादी साहित्यकारों की दृष्टि में संसार में दो ही वर्ग या जातियां हैं– 1. षोषक और 2. षोषित।

पूँजीपति, व्यापारी, जमींदार, उद्योगपति और बाजार के कारोबारी आदि मिलकर पूँजीवादी व्यवस्था को बनाये रखने के लिए निरन्तर प्रयत्नषील है और जबतक यह पूँजीवादी व्यवस्था कायम रहेगी तबतक षोषण का अंत संभव नहीं है। इसलिए प्रगतिवाद के कवियों ने पूँजीवादी व्यवस्था को समूल नष्ट करने के लिए उसके प्रति घृणा का प्रचार किया। उन्होंने पूँजीवादी व्यवस्था से उत्पन्न विषमता, संवेदनहीनता और बर्बरता के खिलाफ स्वर बुलंद किया। दिनकर की पंक्ति है–

‘ष्वानों को मिलता दूध–भात, भूखे बालक अकुलाते हैं।
मां की हड्डी से चिपक ठिठुर जाड़े की रात बिताते हैं।’

कल्पना के सुकुमार कवि सुमित्रा नंदन पंत ने अचानक अपना स्वर बदल कर वायवीय लोक से जमीन पर उतर आते हैं–

‘ताक रहे हो गगन
देखो भू को
जीव प्रसू को।’

षोषकों को ललकारते हुए पंत ने लिखा है–

दर्पी–हठी निरंकुष निर्भय कलुषित कुत्सित,
गत संस्कृति के गरल, लोक–जीवन जिन से मृत।
जग जीवन का दुरुपयोग है उनका जीना,
अब न प्रयोजन उनका, अन्तिम हैं उनके क्षण।

4. शोषित वर्ग के जीवन की दीनता एवं कटुता का चित्रण :– षोषित वर्ग के जीवन की दीनता एवं कटुता का यथार्थ चित्रण करते हुए भगवतीचरण वर्मा ने लिखा–

‘चाँदी के टुकड़ों को लेने
प्रतिदिन पिसकर भूखों मरकर
भैंसा गाड़ी पर लदा हुआ जा रहा चला मानव जर्जर।’

निराला की ‘वह तोड़ती पत्थर’ कविता इलाहाबाद में कांग्रेस के आनंदभवन की अट्टालिका के समक्ष इसी तरह दीनता एवं कटुता का उदाहरण है।

5. नारी के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण :– इस पूँजीवादी और बाजारवादी व्यवस्था में मजदूर तथा किसान की तरह नारी भी षोषित है। युगों–युगों से राजव्यवस्था, सामंतवादी व्यवस्था और पूँजीवादी व्यवस्था में नारी का दास रूप में जबरदस्त दोहन होता रहा है। वह आज भी अन्तिम उपनिवेष है। वह ‘‘वीर भोग्या वसुन्धरा’’ की तरह भोग–विलास और मनोरंजन की वस्तु बनी रही। इसी से पंत ने लिखा है– ‘‘मुक्त करो नारी को।’’

6. सरल शैली :– प्रगतिवाद के कवियों ने अपनी भावनाओं को सरल षब्दों में बिना किसी लाग लपेट के अपनी बात कहते हैं। सरल, सहज एवं स्वाभाविक चित्रण का एक चित्र है– ‘‘कागज की आजादी मिलती/ले लो दो–दो आने में।’’

इस प्रकार प्रगतिवादी साहित्य का मूल लक्ष्य मार्क्स की साम्यवादी विचारधारा का प्रचार करना तथा षोषित वर्ग को क्रांति के लिए षोषक वर्ग के विरुद्ध उत्तेजित करना रहा है। किन्तु पार्टीबद्ध लेखन तथा षुद्ध नारेबाजी के चलते इनका षीघ्र पतन हो गया। बावजूद इसके उसने जीवन को देखने का एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण दिया।

दिनांक : 05/05/2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**